RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 22 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 3 नवम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

हरि प्रदर्शनी के लिये दुम्मर तैयार

महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हरिसिंह जंगपांगी की याद में होता है ऐतिहासिक आयोजन और जुटते हैं इष्ट-मित्र-ग्रामीण। कुटीर-लघु उद्योग प्रदर्शनी का आकर्षण

कार्यालय प्रतिनिधि

मुनस्यारी। हर वर्ष की भाँति इस बार भी मल्ला दुम्मर में तीन दिवसीय हरि प्रदर्शनी के लिये दुम्मर तैयार है। 5, 6, 7 नवम्बर को होने वाली इस प्रदर्शनी के लिये इलाके में पहले से ही उत्साह है। दुम्मर व आस-पास के तमाम ग्रामों की टीमें आयोजन में प्रतिभाग के लिये तैयारी कर चुकी हैं।

महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. हरि सिंह जंगपांगी की स्मृति में होने वाली यह प्रदर्शनी सीमान्त क्षेत्र की इकलौता ऐसा आयोजन है जो आजादी के बाद से निरन्तर जारी है। जंगपांगी बन्धुओं द्वारा शुरू किये गये इस आयोजन ने जिस प्रकार का वृहद स्वरूप धारण किया है उसमें दूरस्थ क्षेत्र के तमाम लोग जुड़ते चले गये और यह जोहार के सभी स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने का दिन भी हो गया। साथ ही लघु व कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने की दिशा में बड़ा आयोजन बन चुका है। इस परम्परा के पीछे जिन लोगों का समर्पण रहा है उन्होंने बहुत विचार कर समाज को जोड़ने के साथ ही स्वरोजगार की दिशा में पहल की थी। यही कारण है कि कुटीर उद्योग धन्धों में लगे लोगों को हरि प्रदर्शनी का इन्तजार होता है और यहाँ लगने वाली प्रदर्शनी में कृषि उत्पादों के अलावा पुष्प प्रदर्शनी, ऊनी वस्त्र, दन, थुलमे, कृषि औजार, जड़ी-बूटी की प्रदर्शनी लगती है। हरि स्मारक समिति की ओर से निर्णायकों के निर्णय के बाद विजेताओं को पुरस्कार भी दिया जाता है। प्रदर्शनी के शुरूआत के समय में तो पशुओं की प्रदर्शनी भी लगा करती थी। प्रदर्शनी में हाथ के बनाए वस्त्र, औजार, फल, सब्जी, पुष्प इत्यादि लेकर बच्चे-बूढ़े आते हैं और प्रदर्शनी के अन्त तक परिणाम जानने के लिये आतुर रहते हैं। आयोजन के लिये मल्ला दुम्मर में इष्ट-मित्रों के अलावा सभी ग्रामीण जिस उत्साह से जुटते हैं वह सभी के लिये प्रेरणा की बात है। बिना किसी सरकारी सहायता के वर्षों से नियमित रूप से जारी इस प्रदर्शनी में खास बात यह भी है कि सांस्कृतिक उत्सव के नाम पर स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहित किया जाता है और महिला मंगल दलों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले हुस्का/झोड़ा प्रतियोगिता में इन्हें संरक्षण मिलता है।

प्रदर्शनी के दौरान होने वाले खेलकूदों का उत्साह भी देखते ही बनता है। स्व. नरसिंह जंगपांगी स्मृति बालीबाल टूर्नामेंट के अलावा अन्य खेलों का आयोजन इस बार भी होना है। आयोजन को लेकर दुम्मर के अलावा हल्द्वानी में समिति की बैठक हो चुकी है। प्रदर्शनी के दिनों में ही मल्ला जोहार विकास समिति की वार्षिक आमसभा भी होनी है।

भारत के मीलपत्थर

इतिहास ने दुर्योधन से पूरा न्याय नहीं किया

सूर्यकान्त बाली

इतिहास ने द्रोण के साथ जरूरत से ज्यादा न्याय कर दिया है तो दुर्योधन से जरूरत से ज्यादा अन्याय कर दिया है। हम देख चुके हैं कि महाभारत में द्रोण के किसी विशेष गुण का परिचय नहीं मिलता, सिवाय इसके कि वे अपने समय के श्रेष्ठतम आयुधजीवी ब्राह्मण थे। फिर क्यों इतिहास ने उनसे इतना न्याय कर दिया कि उनकी छवि हमारे मन-मस्तिष्क में एक श्रद्धेय और आदरणीय आचार्य की बन गई है? चूँकि इतिहास के फैसलों को चुनौती देना आसान नहीं होता, इसलिए द्रोण के बारे में सोचना पड़ेगा कि क्यों उनसे इतना ज्यादा न्याय हो गया।

इसी तरह दुर्योधन के बारे में भी सोचना पड़ेगा। दुर्योधन की जो छवि हमारे जहन में बन चुकी है, दुर्योधन उससे नितान्त अलग हैं, ऐसा हमारा मानना नहीं। पर जो छवि है, उसका अर्थ तो यह निकलता है कि दुर्योधन खलनायक थे, स्वभाव से ही दुष्ट थे और उनमें किसी सद्गुण का कोई स्थान था ही नहीं। क्या यह ठीक है? महाभारत प्रबन्ध काव्य इसकी गवाही नहीं देता। इसके विपरीत दुर्योधन में ऐसे अनेक गुण हमें प्राप्त होते हैं, जो सामान्य मनुष्यों में लगभग दुर्लभ हैं और जो नायकोचित ही माने जा सकते हैं। पर महाभारत युद्ध में मिली पराजय ने दुर्योधन को इस कदर अपयश के गर्त में फेंक दिया कि उनके समस्त सद्गुण भी मिट्टी के नीचे दब गए और वे उसी तरह दुर्गुणों के प्रतीक मान लिये गए जैसे विजेजता युधिष्ठिर को सभी गुणों का प्रतीक मान लिया गया।

इतिहास द्वारा किए गए अन्याय की गिरफ्त में आकर चूँकि हम लोगों ने दुर्योधन को खलनायक मान लिया है, इसलिए आश्चर्यचकित होते हुए भी हमें दुर्योधन के उन कुछ गुणों को जानने का प्रयत्न करना चाहिए, जिनकी वजह से उस समय के भारत के राजसमाज और जनसामान्य में जबर्दस्त सम्मानित और लोकप्रिय हुए थे। भक्ति काल के प्रभाव के कारण और गुलामी की सदियों से बनी अपनी पराजित मानसिकता के कारण हम बेशक महत्वाकांक्षा को अहंकार का प्रतीक मानते रहे हों, पर जैसे भारत विचार और कर्म के नए माहौल में प्रवेश कर रहा है, वैसे वैसे महत्वाकांक्षा को मनुष्य के व्यक्तित्व का एक सद्गुण माना जा रहा है, यह हम जानते हैं। उस सन्दर्भ में देखेंगे तो दुर्योधन का महत्वाकांक्षी होना सद्गुण माना जाए या दुर्गण, उसका फैसला आसानी से हो जाता है। दुर्योधन के चरित्र के सभी दुर्गण उनके पाण्डवों के साथ किए गए व्यवहार में ही दृष्टिगोचर होते हैं, अन्यत्र कहीं नहीं। और पाण्डवों के प्रति दुर्योधन का यह दुर्व्यवहार सिर्फ इसलिए है कि वे नहीं चाहते कि जिस राज्य के शासक सम्राट उनके पिता हैं, हस्तिनापुर का वह राज्य उनकी बजाए उनके चचेरे भाइयों यानी पाण्डवों के पास चला जाए। धृतराष्ट्र और पाण्डु में धृतराष्ट्र बड़े थे और पाण्डु छोटे। पर राजा बनाया गया पाण्डु को, यह कहकर कि धृतराष्ट्र अन्धे हैं, तो क्या इसी आधार पर दुर्योधन भी राज्य से वंचित मान लिये जाएं? और अगर अन्धा होने के बावजूद धृतराष्ट्र को छोटे भाई की मृत्यु के बाद राजा बनने लायक मान लिया गया तो उनकी इस लियाकत को पहली बार क्यों अन्धेपन की छड़ी से हांक दिया गया? चूंकि इन सवालों के सर्वमान्य जवाब किसी के पास नहीं हैं, इसलिए कैसे मान लें कि हस्तिनापुर के सिंहासन पर दुर्योधन का हक था ही नहीं? कैसे मान लें कि इस हक को स्वाभाविक मान लेने वाले दुर्योधन गलत थे और इसलिए उनकी महत्वाकांक्षा नाजायज थी?कैसे मान लें?चूंकि दोटूक मान पाना सम्भव नहीं, इसलिए उनकी महत्वाकांक्षा को एक दुर्गुण मान लें?क्यों न उसे एक नायकोचित विशिष्ट और महान गुण मान लिया जाए?दुर्योधन का पक्ष ठीक था और उनकी महत्वाकांक्षा उचित थी, इसका प्रमाण चाहिए क्या? अगर प्रमाा चाहिए तो वह यह है कि उस समय के भारत के राजसमाज का प्रचण्ड बहुमत दुर्योधन के साथ था और वह युद्ध में अपनी-अपनी सेनाएं लेकर दुर्योधन के हक की रक्षा के लिए लड़ने आया था। द्रुपद जैसे बहुत कम राजा थे, जो पाण्डवों के साथ थे।

दुर्योधन अपने समय के एक अत्यन्त लोकप्रिय शासक थे, इसका प्रमाण तो स्वयं महाभारतकार है। राजा बेशक धृतराष्ट्र थे, पर राजकाज तो दुर्योधन ही कर रहे थे और उन फैसलों पर आचरण भी कर रहे थे। पूरे महाभारत में कहीं नहीं आता कि दुर्योधन के खराब राजकाज के कारण प्रजा में असन्तोष फैला हो, कहीं कोई उपद्रव हुआ हो या कहीं कोई सेना में बगावत हो गई हो। बल्कि दुर्योधन एक अच्छे शासक और सेनानायक थे, इसका प्रमाण महाभारत का उद्योगपर्व है, जहाँ दुर्योधन ने स्वयं सेना की व्यूहरचना की और जैसी श्रेष्ठ वह व्यूहरचना थी, इसका पता वह विवरण पढ़ने से ही हो सकता है। शासक के रूप में दुर्योधन कितने आत्मविश्वास और समझदारी से भरे हुए थे, इसका पता लगाना हो तो सिर्फ अगाध अध्याय पढ़ जाइए (उद्योग पर्व

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

विचार गोष्ठी के रास्ते

विचार गोष्ठी का प्रचलन पहले से है क्योंकि इसमें जुटने वाले लोग किसी विषय को लेकर अपनी राय देते हैं और उस सिलसिले में हो रहे कार्यों से अवगत होते हैं। साथ ही भविष्य में किये जाने वाले कार्यों की रणनीति बनाई जाती है। विचार गोष्ठी सद्कार्यों के अलावा आन्दोलन की रणनीति के लिये भी होती रहती है। विचारों का आदान-प्रदान के लिये जुटे लोगों की बैठक ही विचार गोष्ठी है।

विचार गोष्ठी के रास्ते अब अपने अवसर तलाशने का नया खेल तीसरा प्रकार के रूप में चल पड़ा है। जिसमें सत्ता या ताकतबर लोगों की सराहना करते हुए लाभ बटोरा जाता है। मजेदार तो यह भी है कि ऐसे आयोजनों के लिये ताकबर मुक्त हस्त सहयोग करते दिखाई देते हैं क्योंकि यह मानवीय कमजोरी है कि वह अपनी प्रशंसा के लिये भीड़ व अन्य तामझाम देख पाते हैं। आश्चर्य होता है कि सच्चाई को बताने वाले हाशिये पर कर दिये जा रहे हैं। महाभारत कालीन संजय, विदुर जैसे साफ बोलने वालों की सुनवाई न होना ही बड़ी चूक होता है।

गोष्ठियों के क्रम में एक विचार गोष्ठी 'धामी सरकार के चार वर्ष : उपलब्धियां' शीर्षक से प्रचारित किया गया है। सरकार अपनी उपलब्धि बताने के लिये पर्याप्त है, लेकिन इस उपलब्धि को बताने के लिये कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के कुलपति, जीबी पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति, आम्रपाली विश्वविद्यालय के कुलपति, दिल्ली शिक्षक विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति सहित अन्य जनों का नामोल्लेख है। प्रश्न उठता है कि ताकतबर सत्ता को ऐसी आवश्यकता हो नहीं सकती कि वह कुलपतियों का ढेर लगाकर अपनी उपलब्धि गिनवाए। फिर ऐसा क्यों? असल में इस प्रकार के आयोजनों के पीछे कई रणनीतिकार लगे होते हैं जिन्हें सरकार को रिझाते हुए अपने लम्बे रास्ते तय करने की जुगत करनी होती है। इस सच को सरकार बहादुर समझ जाए तो यही बड़ी उपलब्धि होगा। विचार गोष्ठी के रास्ते ऐसे हों जिसमें आम जनता स्वयं से जुड़ाव महसूस करे।

ऑपरेशन स्वास्थ्य की चौखुटिया से देहरादून तक पदयात्रा

पहाड़ में स्वास्थ्य सेवा को लेकर चौखुटिया से शुरू हुआ आन्दोलन पूरे प्रदेश में फैल चुका है। ऑपरेशन स्वास्थ्य के तहत चौखुटिया से देहरादून तक पदयात्रा में हजारों लोग उमड़ पड़े। अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधाओं की मांग को लेकर चौखुटिया में शुरू हुआ यह आन्दोलन जिस प्रकार से फैला उससे पता चलता है कि सुविधाओं के आभाव में रेंग रहे और नेताओं के छलावे में तैर रहे उत्तराखण्ड में यह आक्रोश की लहर है। पूर्व फौजी भुवन कठैत के नेतृत्व में शुरू हुए इस आन्दोलन की जड़ में जाएं तो पता चलता है कि अभाव झेल रही प्रदेश की जनता बेहद दुःखी हो चुकी है। राज्य स्थापना की रजत जयन्ती धूमधाम से मनाने की तैयारी है लेकिन मूलभूत सुविधाओं के वंचित पर्वतीय क्षेत्र के पास सिवाय आन्दोलन के बचा ही क्या है? प्रदेश को सुख-समृद्धि बनाने का दावा करने वाले सभी दल और नेताओं का भोलापन उस समय शैतान बनकर दिखाई देता है जब वह अपनी-अपनी करने लगते हैं। इन्हीं सच्चाई को उजागर करते हुए पदयात्रा का रूप दिखाई दिया है।

गेवाड़ घाटी के इस आन्दोलन की धार देखते हुए सरकार ने सीएचसी चौखुटिया को उप जिला अस्पताल में अपग्रेट करने और दो डाक्टरों की की तैनाती के आदेय दिये थे लेकिन आन्दोलनकारियों का कहना है कि जब तक डाक्टरों, उपकरणों और संसाधनों की पूरी व्यवस्था नहीं होती यह आन्दोलन जारी रहेगा। कमोवेश यही स्थिति अन्य जगह भी है, इसीलिए आन्दोलन से हर कोई जुड़ता चला जा रहा है। सरकारों को भी चाहिये कि वह उत्तराखण्ड राज्य की अवधारणा का ध्यान रखें।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

बेहद चर्चा में राहुल कोटियाल

देहरादून। पत्रकार राहुल कोटियाल बेहद चर्चा में बने हुए हैं। बारामासा का एक्स्ट्रा कवर के माध्यम से लगातार मुद्दे उठाने वाले राहुल के पक्ष में पत्रकारों सहित तमाम सामाजिक संगठन खुलकर सामने आए हैं। प्रदेश सरकार के कार्यों को लेहर कोटियाल अब और भी ज्यादा तीखे दिखाई दे रहे हैं।

पाक को पानी देने से इनकार

काबुल। तालिबान के सवोच्च नेता मावलवी हिबतुल्ला अखुंदजादा ने कुनार नदी पर डैम बनाने को कहा है। भारत के बाद अब अफगानिस्तान भी पाकिस्तान की ओर जाने वाले पानी को रोकने के लिये डैम बनाने की तैयारी कर रहा है।

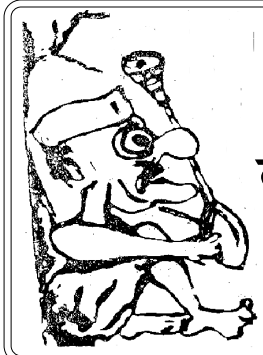

फसक

दाज्यू, टुकड़े डालते रहो लपलपाट दिखने वाली ठैरी

ताकत के नशे के आगे हर कोई बौना दिखाई देता है बल

दाज्यू, बहुत हल्ला मचा हुआ है कि सरकार ने करोड़ों का विज्ञापन देकर अपने मुंह क्रीम लगाई है। हमें समझ नहीं आ रहा है कि क्रीम कौन लगा रहा है और घिसाई किसकी हो रही है। दाज्यू, हमें तो बस इतना पता है कि दुनिया का नाम चट्टम-चट्टा है। टुकड़े डालते रहो लपलपाट दिखने वाली ठैरी। ताकत का नशा भूल जाता है कि नशे से ही ताकत दोगुनी हो जाती है।

पत्तरफाड़ गुलाब सिंह कह रहा है- 'धामी सरकार ने धाकड़ बनने के लिये विज्ञापनों की पौंबहार कर दी और हमें चूहामार दवा तक नसीब नहीं है।' दाज्यू, गुलाब दा ठीक ही कह रहा होगा क्योंकि जिस तरह से कलजुग में समाचार की जगह विज्ञापनों के बण्डल बंध चुके हैं उस धुरमुण्ड में क्या जो कहा जा सकता है। दाज्यू, ताकत के नशे के आगे हर कोई बौना दिखाई देता है बल। इतिहास में बहुत उलट-पुलट समय-समय पर होता रहा है। जिसके हाथ सोठा हो वह हांकने में देरी क्यों लगाएगा।

हल्ला मचा हुआ है कि विधानसभा सचिवालय में क्लर्क पद पर फर्जी नियुक्ति पत्र दे दिया। इसके बाद अनुसचिव ने मुकदमा दर्ज कराया बल। दाज्यू, आरटीआई से सूचना के बाद से हड़कम्प मचना ही था। हमें तो लग रहा है कि कलजुग में ही सारी कलाकारी होनी होगी। ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभी चकित हो रहे होंगे कि उनकी रची दुनिया के खिलौने कितने खुरापाती हो चुके हैं।

नैनीताल घूमने आए पर्यटक को रफ ड्राइविंग भारी पड़ गई। दिल्ली के पर्यटक जयकिशन ने अपनी गलती मानने के बजाए पुलिस से अकड़-बकड़ कर दी बल। दाज्यू, ताकत का नशा वक्त-बेवक्त बोलने वाला ठैरा। अब तो मिल डे मील के मेन्यू से अण्डा बाहर हो गया है बल। कब्बू बता रहा था- 'अण्डे की कीमत ज्यादा होने से इसे मेन्यू से हटाना पड़ा।' दाज्यू, हम तो कह रहे हैं कि स्वाद से भरपूर दाल-भात मिल जाए वही बहुत है। गोपी मास्साब तो फ्राई करके अपना जुगाड़ कर लेते हैं।

दाज्यू, जो अपने हाथ में नहीं है उसके लिये क्या किया जाए? हरिद्वार के रोशनाबाद के कोर्ट परिसर में देर रात जंगल हाथी ने उत्पात मचा दिया। जमालपुर कलां में भी हाथियों ने जमकर उत्पात मचाया बल। अपनी ताकत दिखाते हुए हाथी झुण्ड ने गन्ने की फसल रौंद डाली। घण्टों की मशक्कत के बाद वन प्रभाग ने हाथियों को खदेड़ा। इस बीच हम धर्मनगरी में घूमने लगे तभी पता चला कि क्रिकेटर महेन्द्र सिंह धौनी अपनी पत्नी साक्षी और ससुराल पक्ष के साथ गंगा स्नान को पधारे हैं। दाज्यू, श्रीगंगा सभा ने उनकी पूजा करवाई। भण्डारा तो हरिद्वार में प्रसाद ही हुआ, महेन्द्र धौनी की ओर से भी बंटा। इसके बाद हम देहरादून चल दिये। सुना था सारे आन्दोलनकारी वहाँ चक्कर लगा रहे हैं।

दाज्यू, ताकत का नशा तो होता ही है लेकिन नशे की ताकत भी कम नहीं होती। दून पुलिस ने शराबियों की बारात लेकर थाने पहुँच गई। बारातियों का इतना नशा हो गया था बल वो सड़क किनारे घमाघम करने लगे। पुलिस ने सख्त हिदायत देकर छोड़ा। दाज्यू, उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती का आयोजन की अग्रिम शुभकामनाएं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

चम्पावत विधानसभा के नेताओं में जोश!

सीएम के दौरे और पूर्व विधायक की सक्रियता के संकेत

प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के विधानसभा क्षेत्र चम्पावत के नेताओं में जोश उमड़ चुका है। इस जोश के पीछे का सच समय आने पर और भी साफ होगा क्योंकि इसके पीछे सारी कोशिश 2027 के विधानसभा चुनाव है। भाजपा कांग्रेस के भीतर जोश का उबाल पूरा है लेकिन नेताओं के गुट अपनी कही पर मंथन करने लगे हैं।

ताकत का अनुमान लगाया जाए तो जाहिर सी बात है प्रदेश के मुखिया ही सबसे बड़ी ताकत होंगे। अनुमान सीधा सा लगाया जा रहा है कि धामी ही इस सीट पर चुनाव लड़ेंगे। क्योंकि जिस प्रकार से वह बराबर क्षेत्र का दौरा करते हुए तमाम योजनाओं की घोषणा कर रहे हैं उससे साफ-साफ ऐसा दिखाई दे रहा है। वैसे भी पुष्कर धामी ने युवा जोश दिखाते हुए प्रदेश में चारों ओर जिस प्रकार से मथना शुरू किया है वह भारतीय राजनीति के दिग्गज नेता पं.नारायण दत्त तिवारी के बाद दूसरे ऐसा नेता हैं जिन्हें खासा अवसर कुर्सी का मिला और वह चौकस भी हैं। उन्हें बाहर-भीतर चाहे कोई कैसे घेरे वह रास्ता बनाने में प्रवीण हैं।

दूसरी ओर कांग्रेस के पूर्व विधायक होमेश खर्कवाल पूरे जोश के साथ हर समय जनता के बीच दिखाई दे रहे हैं। अपने पार्टी संगठन की रीति-नीति के अनुसार खर्कवाल लगातार आवाज उठा रहे हैं। यही कारण है कि मुख्यमंत्री के दौरे के दौरान उनकी पुलिस पकड़ बराबर चर्चा में है। कार्यकर्ताओं के साथ नारेबाजी करते हुए उन्हें पुलिस ने रोका है।

अनुमान लगा रहे हैं कि धामी ही लड़ेंगे सीट पर धामी टीम ले रही है टोह और होती घोषणाएं होमेश खर्कवाल बराबर जनता के बीच बने हैं टिकट की चाह में कई चेहरे चौकाने वाले भी

अब बात यही भाजपा-कांग्रेस की एकसाथ करें तो पता चल रहा है कि दोनों ही पार्टियों में चौकाने वाले चेहरे टिकट की चाह में हैं। चुनाव की समय पार्टी किसको अपना प्रत्याशी बनाएगी वह बाद की बात है लेकिन इन बड़ी पार्टियों में टिकट का साहस जुटाने वाले भी साधारण तो हैं नहीं। इसका मायने है कि 2027 का चुनाव घमासान बहुत ही उलझा हुआ होगा कि कौन किसके साथ किस प्रकार से साथ दे रहा है।

फिलहाल सीएम ने अपने ताजा दौरों बनबसा में 500 करोड़ की आधुनिक लैंड पोर्ट परियोजना का स्थलीय निरीक्षण करते हुए बताया कि यह प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी योजना है। सीएम धामी ने चूड़ा पूजन समारोह में प्रतिभाग करते हुए जनता से सम्पर्क किया। सीएम ने शारदा घाट पर पूजा-अर्चना करते हुए कहा कि क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियां बड़ी हैं। उन्होंने 20.50 करोड़ की दस विकास योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास करने के साथ ही पन्तनगर की तर्ज पर चम्पावत में कृषि विश्व विद्यालय की स्थापना किए जाने की घोषणा की।

इस प्रकार चम्पावत विधानसभा क्षेत्र में लगातार गतिविधियों के साथ नेताओं की खुसरफुसर और चहलकदमी अब काई आश्चर्य की बात नहीं लग रही क्योंकि आम जनता जान चुकी है कि सबका मकसद आगामी विधानसभा चुनाव पर निशाना है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पर्यावरण

केदारनाथ रोपवे परियोजना पर पर्यावरणविदों की आपत्ति

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखंड के चार धामों में से एक विश्व प्रसिद्ध केदारनाथ धाम में श्रद्धालुओं को रोपवे सुविधा मिलेगी। इसके लिए तैयारी तेजी से चल रही है। केन्द्र सरकार ने केदारनाथ रोपवे परियोजना का टेण्डर प्रक्रिया भी पूरी कर ली है लगभग 4 हजार करोड़ रुपये से अधिक लागत वाली इस परियोजना को देश की एक प्रमुख कम्पनी को सौंपा गया है। कम्पनी अगले पाँच सालों में इस रोपवे का निर्माण करेगी और आने वाले 29 वर्षों तक इसका संचालन और रखरखाव भी करेगी। केदारनाथ में रोपवे का सर्वे से लेकर सभी धरातल के काम लगभग पूरे कर लिए हैं.पर्यटन मंत्री से मिली जानकारी के अनुसार, यह रोपवे परियोजना 12.9 किलोमीटर लम्बी होगी, जो सोनप्रयाग से केदारनाथ धाम तक बनेगी. अभी जहाँ श्रद्धालुओं को 16 किमी की पैदल चढ़ाई में 8 से 9 घण्टे लगते हैं, वहीं रोपवे तैयार होने के बाद यह दूरी केवल 35 से 40 मिनट में पूरी की जा सकेगी। इस परियोजना में आधुनिक मोनोकेबल डिटैचेबल गोंडोला तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा, जो तारों के सहारे रोपवे को लाने और जाने में मदद करेगा। हर साल चारधाम यात्रा के दौरान करीब 15 से 20 लाख श्रद्धालु केदारनाथ धाम पहुँचते हैं। बारिश और भूस्खलन के कारण यात्रा अक्सर बाधित रहती है।

वर्तमान में लोग पैदल, खच्चरों और हेलीकॉप्टर से धाम पहुँचते हैं। लेकिन रोपवे बन जाने के बाद यात्रा सुगम और सुरक्षित होगी। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे यात्रियों की संख्या और अधिक बढ़ सकती है। साथ ही लोगों का समय बचेगा। हालाँकि, इस पूरे प्रोजेक्ट पर पर्यावरणविद चिन्तित हैं। प्रसिद्ध पर्यावरण विद् ने इस परियोजना पर सवाल उठाए हैं। पहाड़ पहले से ही प्राकृतिक आपदाओं के दबाव में है। ऐसे में मशीनों और बड़े पैमाने पर निर्माण कार्यों से केदारनाथ क्षेत्र की नाजुक पारिस्थितिकी को खतरा हो सकता है। उन्होंने चेताया कि पिछले वर्षों में उत्तराखण्ड ने कई आपदाएं देखी हैं। इसलिए पहाड़ों पर किसी तरह का बड़ा एक्सपेरिमेंट सही नहीं होगा। उन्होंने कहा कि कोई भी निर्माणकार्य बिना पहाड़ों को काटे और तोड़े नहीं हो सकता है। अगर इसके बिना कुछ होता है तो, बात अलग है। पर्यटन मंत्री का कहना है कि रोपवे परियोजना से पर्यावरण को नुकसान नहीं, बल्कि फायदा होगा। मंत्री की मानें तो जो श्रद्धालु अभी हेलीकॉप्टर से जाते हैं, वो रोपवे का विकल्प चुनेंगे। इससे हेलीकॉप्टर की आवाजाही कम होगी और कार्बन उत्सर्जन भी घटेगा। यात्रियों को आरामदायक सुविधा मिलेगी और स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा।

मंत्री जी ने तो यह भी बताया है कि भविष्य में केन्द्र और राज्य सरकार मिलकर हेमकुण्ड साहिब तक भी रोपवे का निर्माण करेंगी। उत्तराखण्ड में जितने भी धार्मिक स्थल हैं, सरकार वहाँ भक्तों के लिए बेहतर सुविधा जुटा रही है। केदारनाथ की चढ़ाई बेहद कठिन है, ऐसे में बहुत से लोग जा पाते हैं और बहुत से लोग नहीं जा पाते। केदारनाथ में इस प्रोजेक्ट की इसलिए भी जरूरत है, ताकि आसानी से श्रद्धालु धाम तक पहुँच सके। हम आगे ओर भी इस तरह के प्रोजेक्ट प्रदेश के ऊँचे इलाकों में बनाने जा रहे हैं।

पर्यटन मंत्री का कहना है, किसी भी प्रोजेक्ट को शुरू करने से पहले उसका प्रॉपर सर्वे होता है। कोई भी प्रोजेक्ट यूं ही तैयार नहीं होता है। हमारे प्रदेश में रेल मार्ग भी बन रहा है और जल्द तैयार हो जाएगा। सरकार बेहद शानदार तकनीक से सभी प्रोजेक्ट तैयार कर रही है। उत्तराखण्ड का मनसा देवी या सुरकण्डा देवी रोप-वे प्रोजेक्ट भी सर्वे के बाद ही बने हैं। उनमें कोई दिक्कत नहीं, क्योंकि सभी पहलुओं की देख-रेख के बाद ही काम शुरू होता है। उन्होंने कहा कि, साथ ही समय समय पर रोप-वे और पहाड़ों के हालात परखे जाते हैं। ऐसा नहीं है कि किसी का इससे रोजगार छिनेगा, बल्कि रोजगार बढ़ेगा। यात्रियों की संख्या अधिक आएगी, तो काम भी अधिक लोगों को मिलेगा। इसलिए ये कहना कि रोपवे से किसी का रोजगार खत्म हो जाएगा, गलत है। आज अगर 20 लाख भक्त आ रहे हैं, फिर हो सकता है 30 लाख या उससे कई अधिक आएं। पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता ने दावा किया कि रोपवे की योजना यूपीए सरकार के समय ही बनाई गई थी। उनका कहना है कि हमारी (कांग्रेस) सोच यह थी कि सोनप्रयाग से सीधा रोपवे न बने, बल्कि बीच में गौरीकुण्ड जैसे धार्मिक स्थल पर एक स्टॉप रखा जाए। इससे स्थानीय व्यापारियों को भी लाभ मिलेगा और तीर्थ का पारम्परिक स्वरूप बना रहेगा। सीधा रोपवे बनना स्थानीय लोगों के साथ अन्याय होगा। हम पहले से ही कहते रहे हैं कि उत्तराखण्ड के पहाड़ इस लायक नहीं हैं कि उनमें इतने बड़े प्रोजेक्ट लाए जाएं। लेकिन फिर भी पहाड़ों को लगातार खोदा और डायनामाइट से तोड़ा जा रहा है। जोशीमठ की घटना हाल ही का उदाहरण है। हर साल बारिश के दौरान केदारनाथ और आसपास की घटना एक चेतावनी है। सरकार टीटमेंट करे लेकिन भारी मशीनें का उपयोग और पहाड़ों को खोदना सही नहीं है। ये सभी पहाड़ बेहद नए हैं और उनमें काम करना सही नहीं है स्थानीय लोगों की उम्मीदें अभी तक अधिकांश लोग पैदल या खच्चरों के सहारे धाम तक जाते हैं, जिससे यात्रा सीमित रहती है. लेकिन रोपवे शुरू होने पर अधिक संख्या में श्रद्धालु पहुँचेंगे। जिससे रोजगार और पर्यटन दोनों को फायदा होगा। बहरहाल केदारनाथ रोपवे परियोजना, उत्तराखण्ड के लिए एक ऐतिहासिक कदम साबित हो सकती है। हालांकि रोपवे से श्रद्धालुओं के लिए केदारनाथ धाम की यात्रा आसान होगी, लेकिन पर्यावरण और स्थानीय संस्कृति पर इसके प्रभाव को लेकर चिन्ताएं भी हैं। ऐसे में आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि सरकार इन दोनों पहलुओं के बीच सन्तुलन कैसे बनाती है। क्योंकि उत्तराखण्ड में पेड़ों का अंधाधुंध कटान मौजूदा आपदा का सबसे बड़ा कारण है। सर्वोच्च अदालत ने तब भी दखल दिया था जब गंगोत्री की भैरों घाटी में आलवेदर की भेंट चढ़ रहे देवदार और अन्य प्रजातियों के सैकड़ों पेड़ों को बचाने के लिए इनके तनों पर राखियां/रक्षासूत्र बांधे जा रहे थे। तब तो सुप्रीम कोर्ट ने बाकायदा जियोलॉजिस्ट की एक कमेटी तक गठित की, लेकिन सरकारों के पास हर किस्म का तोड़ है। मनमुताबिक सड़क चौड़ी करने के लिए उसने सड़क को किलोमीटर के हिसाब से ऐसे छोटे-छोटे हिस्सों में बांट दिया, जिनके लिए एनजीटी मंजूरी की जरूरत ही नहीं होती। यही सब देखकर कमेटी से नामी जियोलॉजिस्ट को इस्तीफा देना पड़ा। पहाड़ों में सड़क बनें, पर कितनी चौड़ी बनें! होटल बनें, पर क्या भारी-भरकम निर्माण सामग्री के साथ इतने विराट बनें कि पूरी पहाड़ी खोदनी पड़ जाए! बांध बनें, पर क्या रिजर्व-वायर का आयतन गुपचुप बढ़ा दिया जाए! तीर्थों को सुविधामय बनाने के लिए उनका विकास हो, पर सुरक्षित पर्यावरण के उसूलों का मखौल उड़ा दिया जाए! ये प्रश्न पहले हमें खुद से पूछने होंगे, मौसमी बदलाव के सैद्धान्तिक अवयवों का नम्बर इसके बाद आता है। आधुनिक और अन्धाधुन्ध विकास का चश्मा लगाकर हिमालय और इसके संसाधनों पर लार टपकाने वाली सरकारें और उसके योजनाकारों की फौज यदि छटांग भर भी इस बात समझ सकती कि हिमालय के लिए किस तरह की योजनाओं का खाका खींचना है तो शायद हमें धराली और थराली जैसे विनाशों के लिए मौसमी परिवर्तन की आड़ न लेनी पड़ती। अफसोस कि क्षति के लिए हमारे निशाने पर सिर्फ आसमान है, जमीन पर पसरी मानवीय भूलें नहीं! उत्तराखण्ड का रुद्रप्रयाग जिला सम्वेदनशीलता की दृष्टि से एक नम्बर पर तथा टिहरी दूसरे नम्बर पर दिखाया गया है। प्रदेश के सभी 13 जिले सम्वेदनशील बताये गये हैं। लेकिन इस ओर कोइ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। एनआइडीएम की रिपोर्ट में भूस्खलन जोनेशन मैपिंग का प्राथमिकता के आधार पर पालन, निर्माण कार्यों में विस्फोटों के प्रयोग पर रोक, सड़क निर्माण में वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर, ढलानों के स्थिरीकरण के ठोस प्रयास और ग्लेशियल लेक तथा नदी प्रवाह निगरानी का ठोस ढांचा तैयार करने की सिफारिश भी की गयी थी। अगर इन सिफारिशों पर ध्यान दिया जाता तो पहाड़ इस तरह नहीं काटे जाते और केदारनाथ जैसे सम्वेदनशील स्थान पर सीमेंट कंक्रीट का इतना बड़ा ढांचा भी खड़ा नही किया जाता हजामत की तैयारी न होती।

ज्योतिष की बातें- 253

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य कोई भी ग्रह राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह बृहस्पति अपनी उच्चराशि कर्क में, मंगल व शुक्र स्वराशि वृश्चिक व तुला में, बुध व शनि समराशि वृश्चिक व मीन में, सूर्य शत्रुराशि तुला में गोचर करेंगे तथा चन्द्रमा सम्पूर्ण सप्ताह मीन, मेष, वृषभ व मिथुन राशि में क्रमशः गोचर करेगा।

बैकुण्ठ चतुर्दशी- कार्तिक शुक्लपक्ष चतुर्दशी निशीथ व्यापिनी तिथि में बैकुण्ठ चतुर्दशी का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार मंगलवार 4 नवम्बर 2025 को रात्रि में भगवान विष्णु का पूजन करने के बाद भगवान शंकर का विधिवत् पूजन किया जाएगा।

देव दीपावली- कार्तिक शुक्लपक्ष पूर्णिमा प्रदोष व्यापिनी तिथि में देव दीपावली का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार 5 नवम्बर 2025 को देव दीपावली का पर्व रहेगा। इसी के साथ कार्तिक स्नान पूर्ण हो जाता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 143

परिवारों का THE END

मैंने देखा एक महाविद्यालय में बहुत सी महिला प्राध्यापकों में केवल एक ही शादीशुदा थी। एक मेरा मित्र है, उनके छः भाई-बहनों में से शादी किसी की भी नहीं हुई। बहुत से परिवारों में एक ही सन्तान है, वह भी कन्या। एक और हमारे बुजुर्ग मित्र हैं उनकी दोनों बेटियों और फिर बेटे की भी शादी हो गई लेकिन बहु-बेटे ने सन्तान उत्पन्न ही नहीं की। अब वे बहू-बेटे भी बुजुर्ग होने को हैं। बहुत से परिवार ऐसे हैं जिसमें केवल एक पुत्र है और वह भी अब शादी नहीं करना चाहता। बेटों ने यदि शादी कर भी ली है तो वे बहू-बेटे सन्तान पालना ही नहीं चाहते, ऐसे ही पैसा कमाते कमाते गुजारा करना चाहते हैं। इस प्रकार बहुत से लोगों ने स्वयं तो अपना परिवार आगे बढ़ाया लेकिन उनके बेटे परिवार नहीं बढ़ाना चाहते। एक या दो पीढ़ी के बाद परिवार नष्ट होने की कगार पर हैं।

मरने पर कन्धा देने के लिए खानदान में चार पुरुषों का मिलना तो दूर की बात हो गई है, मरने पर एक पिण्डदान करने वाला भी नहीं बचा है। आगे मृतक का श्राद्ध और तर्पण कौन करेगा। आप चारों तरफ अपनी निगाहें दौड़ा कर देखें तो पाएंगे कि लगभग आधे परिवार THE END की स्थिति में पहुँच चुके हैं। पहले यह बीमारी अमीर घरों में थी अब यह बीमारी गरीब घरों में भी व्यापक रूप से फैल चुकी है। इस विकराल समस्या पर सरकार को, समाज को और प्रवचनकारों को विचार करना चाहिए। मेरे विचार से इसका मुख्य कारण है नारी सशक्तिकरण अभियान।

-ओंकार नाथ कोष्टा

आपके पत्र

नैनीताल के प्रति चिन्ता

महोदय, 'चेतावनी' शीर्षक से आपने नैनीताल के प्रति चिन्ता जाहिर की है। यह एक अच्छी पहल है और पूरे नैनीताल वासियों को इस सम्वेदनशील एवं महत्वपूर्ण विषय की गम्भीरता को समझते हुए जागरूक होना पड़ेगा। विगत कुछ वर्षों पहले भी 'नैनीताल बचाओ' के नाम से एक जागरूकता अभियान चलाया गया था जो आन्दोलन कुछ समय तक प्रभावित रहा लेकिन नगर प्रशासन के धन बल के प्रभाव में आने से यह आन्दोलन धीरे धीरे प्रभावहीन हो गया।

दरअसल पृथक राज्य बनने के बाद यहाँ हाईकोर्ट के स्थापित होने व नैनीताल राज्य का एकमात्र खूबसूरत पर्यटक स्थल होने से यहाँ पर होटल व्यवसाय तेजी से फैलने लगा और नये-नये आलीशान होटलों एवं आवासीय भवनों का निर्माण तेजी से होने लगा। पहाड़ियों पर भी सड़कों का निर्माण होने से पहाड़ों की भार क्षमता धीरे धीरे कम होने लगी परिणाम स्वरूप पहली बार लोअर मालरोड में धंसाव हुआ। यह प्रकृति की एक चेतावनी थी। जिसे जिला प्रशासन ने गम्भीरता से न लेकर उसमें भरान करके लीपापोती कर दी थी।

जोशीमठ के भू धंसाव के बाद आपके पत्र के माध्यम से नैनीताल प्रशासन व नैनीताल बचाओ संघर्ष समिति का ध्यान आकर्षित करते हुए चिन्ता व्यक्त की थी कि नैनीताल को ऐसी भयावह स्थिति से बचाने की अभी से रोकथाम करना जरूरी है।

-उमेश चन्द्र पाण्डे
जगदम्बा नगर, हल्द्वानी

पठनीय सामग्री से भरपूर अंक

महोदय, 'पिघलता हिमालय' अंक से पठनीय सामग्री भरपूर अंक देख और पढ़ कर विविध महत्वपूर्ण समाचारों से अवगत हुआ। आपका सम्पादकीय आलेख सहित सभी सामग्री जानकारी पूर्ण एवं ज्ञानवर्धक है। एतदर्थ आपको एवं आपकी सम्पादकीय टीम को बहुत बहुत साधुवाद।

-रतन सिंह किरमोलिया
गरुड़, बागेश्वर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चम्पावत मंदियों के लिये राशि स्वीकृत

चम्पावत। जिलाधिकारी मनीष कुमार ने बताया कि सीएम द्वारा चम्पावत विधान सभा क्षेत्र के लिये की गई महत्वपूर्ण घोषणा मल्लाडेश्वर, कान्तेश्वर, मानेश्वर, भागेश्वर, ताड़केश्वर, डिप्टेश्वर तथा झालीमाली मन्दिर का सौन्दर्यीकरण होना है। इसके लिये चार करोड़ 70 लाख रुपये की प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गई है।

आपदा के दो माह बाद शव बरामद

रुद्रप्रयाग। जिले के बसुकेदार क्षेत्र के छेनागाड़ में बीती 28 अगस्त को आई आपदा के दो महीने बाद मलबे में दबे 2 लोगों के शव बरामद हुए हैं। प्रशासन और लोनिवि ऊखीमठ की टीम ने मलबा हटाने के दौरान यह सफलता हासिल की। 7 लोग अभी भी लापता हैं, जिनकी खोज जारी है।

नीरजा ने एडवेंचर्स में रचा इतिहास

ऋषिकेश। पैरा इन्टरनेशनल बैडमिंटन वर्ल्ड चैम्पियनशिप में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुकीं डॉ.नीरजा गोयल ने जापान में आयोजित इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में इतिहास रचा है। उन्होंने शिवपुरी स्प्लैश बंजी जम्पिंग में 109 मीटर से कूदकर यह रिकार्ड दर्ज किया।

दिव्या ज्योति ब्राजील में करेंगी प्रतिनिधित्व

उत्तरकाशी। पुरोला क्षेत्र की कु. दिव्या ज्योति बिज्लवाण पुत्री गुरुप्रसाद बिज्लवाण, निवासी ग्राम पोरा का चयन ब्राजील में आयोजित होने वाली 20वीं यूनाइटेड क्लाइमेट चेंज कॉन्फ्रेंस आफ चिल्ड्रन एण्ड यूथ में भारत की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में हुआ है। फडरल यूनिवर्सिटी ऑफ परा, बेलेम (ब्राजील) में होने वाले इस आयोजन में विश्वभर के युवा प्रतिनिधि विचार-विमर्श करेंगे।

पांगला महोत्सव का आयोजन

धारचूला। कैलास मानसरोवर यात्रा मार्ग पर बसे पांगला में पहली बार महोत्सव का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा वालीबॉल टूर्नामेंट मुख्य आकर्षण रहा।

कैप्टन लच्छी चन्द का निधन

टनकपुर। समाजसेवी व आठवीं गोरखा रेजीमेंट के अवकाश प्राप्त कैप्टन लच्छी चन्द का निधन हो गया है। 92 वर्षीय चन्द जी कुछ समय से अस्वस्थ्य चल रहे थे। वर्ष 1986 में सेना से सेवानिवृत्त लच्छी चन्द सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहे। वह अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र, दो पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके ज्येष्ठ पुत्र कैप्टन राजेन्द्र चन्द और सुभाष चन्द आम बाग क्षेत्र में रहते हैं। स्व.लच्छी चन्द जी को पिघतला हिमालय परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बग्वालीपोखर में 'बग्वाली कौतिक' ओड़ा भेंटने की परम्परा में जुटे लोग

द्वाराहाट। बग्वालीपोखर के ऐतिहासिक बग्वाली कौतिक में ओड़ा भेंटने की परम्परा में बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी जुटे। मेले की शुरुआत शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित कर शहीदों को नमन करने के साथ हुई।

भण्डरगाँव के प्रधान पविार के भवान सिंह भण्डारी व दीवान सिंह भण्डारी तथा थोददार परिवार के बहादुर सिंह भण्डारी के नेतृत्व में ओड़ा भेंटने की परम्परा का निर्वहन किया गया। विधायक मदन सिंह बिष्ट ने दीप प्रज्जवलित कर सांस्कृतिक आयोजन का शुभारम्भ किया। उन्होंने युवाओं द्वारा पारम्परिक मेले में नए प्रयोगों की सराहना करते हुए कहा कि नई पीढ़ी की सक्रिय भागीदारी इस आयोजन को और समृद्ध बना रही है। विधायक ने मेले के विस्तार के लिये दो लाख रुपये तथा मेला स्थल के समीप मन्दिर के विकास के लिये 5 लाख रुपये की धनराशि देने की घोषणा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता आशुतोष शाही ने करते हुए बग्वाई कौतिक के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला।

मडलक के वैष्णवी मेले में उमड़ा सैलाब

लोहाघाट। नेपाल सीमा से लगे मडलक क्षेत्र का प्रसिद्ध वैष्णवी मेले में देवी रथों के समागम ने वातावरण भक्तिमय बनाया और लोगों का सैलाब उमड़ पड़ा। विशेष पूजा अर्चना के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

विभिन्न ग्रामों से आए देवी के जत्थों और रथों ने मडलक देवी मन्दिर की परिक्रमा कर श्रद्धालुओं को आशीर्वाद दिया। मेले में प्रशासन और ग्रामीणों ने मिलकर बेहतर सुरक्षा व्यवस्था की थी।

मेले में मडलक, सेलपेड़ू, सुनकुरी, जजपीपल, कन्टुकरा, सागर, धौनी बुंगा, गुरेली, चामा, जमरसों, बड़म, डुंगरालेटी, रौलधौन, गुडमांडल, केलानी, ककरतोला, सल्टा सहित दर्जनों गाँवों के श्रद्धालुओं ने भागीदारी की। मेले का मुख्य आकर्षण मजपीपल, मडलक और देवी मैत बूंगा से निकले देवी रथ व जत्थे रहे। दोपहर बगौटी से शुरू हुए जत्थे सेल्ला, केलानी, सुकुरी, रजवा आदि गाँवों के सैकड़ों लोग शामिल हुए। दुर्गम पहाड़ियों को पार कर जत्था मजपीपल पहुँचा, जहाँ देवी रथ के साथ इसका समागम हुआ। परिक्रमा के बाद रथ देमैत बुंगा रवाना हुआ। सागर गाँव के सेल्ला लोगों ने मायके पक्ष की भूमिका निभाते हुए भगवती और काली के रूप में अवतरित डांगरों को वस्त्र भेंट किये किए। देवी डांगरों ने मायके वालों को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद दिया। मन्दिर के पुजारी चन्द्रशेखर पाण्डे ने पूजा सम्पन्न करवाई। विधायक खुशाल सिंह अधिकारी भी मौजूद रहे।

ऋषिकेश में बजरंग सेतु निर्माण कार्य

हरिद्वार। योगनगरी में बन रहा बजरंग सेतु निर्माण को लेकर कौतुहल बना हुआ है। पुल का कार्य अभी अधूरा है लेकिन जल्द इसके पूरा होने की उम्मीद है। भारत में बन रहे पहले कांच के सेतु को लेकर लोगों में भारी उत्सुकता है। यह एक आधुनिक सस्पेंशन ब्रिज है जो इंजनियरिंग के साथ-साथ आध्यात्मिकता का भी संयोग है। यह ग्लास वॉकवे लगभग सौ साल पुराने लक्ष्मण झूला की जगह ले रहा है। इस पुल के ऊपर से गुजरते हुए लोग माँ गंगा के दर्शन कर सकेंगे।

बताते चलें कि 1929 में बना यह लोहे का सस्पेंशन ब्रिज अपने समय में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध रहा है। इस पुल से गंगा नदी के पार तपोवन और जोंक गांवों को जोड़ता था। यह भगवान लक्ष्मण की कहानी का प्रतिनिधित्व करता था। मान्यता है उन्होंने इसी स्थान पर जूट की रस्सी का उपयोग करके नदी पार की थी।

फिलहाल 68 करोड़ 86 लाख 20 हजार की लागत से बन रहे 132.30 मीटर स्पान के वैकल्पिक बजरंग सेतु का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

हल्द्वानी में दूसरी प्रोसेसिंग मशीन चालू

हल्द्वानी। नगर निगम ने शहर को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त बनाने के लिये गौलापार स्थित ट्रंचिंग ग्राउण्ड में दूसरी प्रोसेसिंग मशीन स्थापित कर चालू कर दी हे। मुख्य नगर आयुक्त पारितोष वर्मा ने निरीक्षण के बाद बताया कि नई मशीन शुरू होने से अपशिष्ट निस्तारण की क्षमता बढ़ेगी और शहर में पर्यावरण संरक्षण को बल मिलेगा। नगर निगम आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर कचरा निस्तारण प्रणाली को और प्रभावी बना रहा हे। उन्होंने कहा कि लक्ष्य है कि हल्द्वानी को स्वच्छ, स्वस्थ और हरित शहर बनाना। मुख्य नगर आयुक्त ने बताया कि यह मशीन नगर क्षेत्र में प्रतिदिन जुटने वाले अपशिष्ट निस्तारण में मदद करेगी और स्वच्छता मिशन को बल देगी। उन्होंने सभी से अपील की कि अपने आस-पास कूड़ा न होने दें और नियत स्थान पर सूखा व गीला कचरा डालें।

बेरीनाग में जाम से हो रही अव्यवस्था

बेरीनाग। नगर में जाम की समस्या कम होने का नाम नहीं ले रही है। दरअसल सड़क पर बेतरतीब खड़े वाहनों के कारण बाजार क्षेत्र में जबर्दस्त जाम लग रहा है और यात्रियों सहित क्षेत्रवासियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। हालात यह हो चुके हैं कि पुराना बाजार क्षेत्र में भी जाम से दिक्कत होने लगी है। पार्किंग सुविधा न होने पर लोग पुरानी बाजार क्षेत्र में वाहन खड़े करने लगे जिससे अस्पताल जाने वाले मरीजों के वाहन फंस रहे हैं। व्यापार संघ अध्यक्ष राजेश रावत ने सभी से यातायात व्यवस्था को सुलझाने में मदद की अपील के साथ ही पुलिस प्रशासन से इसका समाधान निकालने की मांग की है। कोतवाल नरेश गंगवार कहते हैं कि यातायात व्यवस्थित करने के लिये लगातार प्रयास किया जा रहा है। बताते चलें कि त्रिपुरादेवी से बाइपास सड़क होने के बावजूद बाजार क्षेत्र में जाम कम नहीं हो पाया है।

रजत जयन्ती पर कार्यक्रमों का जोर है

देहरादनू। उत्तराखण्ड राज्य जयन्ती समारोह के लिये कार्यक्रमों का जोर है लेकिन इसके पीछे का सच समझने लायक है। दीपावली के अवकाश पर प्रदेश के तमाम कालेज रहे, इस बीच आदेश आता है कि उच्च शिक्षा विभाग द्वारा कालेज व विश्वविद्यालय स्तर पर गायन, वादन, फोटो प्रदर्शनी, वीडियो फिल्म निर्माण, क्विज, वाद-विवाद, वीडियो प्रदर्शनी तमाम तरह के आयोजनों होने हैं। रजय जयन्ती भव्य तरीक से होनी ही चाहिये लेकिन इस सच्चाई को न शासन ने समझा और न ही प्रशासन ने कि पहले छात्र संघ चुनावों में फिर दीपावली अवकाश में रहे कालेजों में किस प्रकार की तैयारी हो रही होगी। चूंकि फरमान जारी हो हो चुका है तो तैयारी भी हो चुकी लेकिन प्रतिभा से लबरेज छात्र-छात्राओं को अवसर देने के लिये बहुत जरूरी है कि कालेज स्तर पर पहले से तैयारी व साधन उपलब्ध हों।

शीतकालीन गद्दीस्थल ओंकारेश्वर ऊखीमठ में

रुद्रप्रयाग। केदारनाथ मन्दिर कपाट बन्द होने के बाद बाबा की पूजा शीतकालीन गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मन्दिर ऊखीमठ में होगी। परम्परागत तरीके से केदारनाथ मन्दिर के कपाट बन्द होने के उपरान्त केदारनाथ भगवान की चल विग्रह पंचमुखी डोली को मन्दिर के सभामण्डप में विराजमान कर दिया गया। विशेष पूजन के बाद डोली की परिक्रमा कर ओंकारेश्वर रवाना हुई।

जोहार महोत्सव की तैयारियां

हल्द्वानी। जोहार सांस्कृतिक एवं वेलफेयर सोसाइटी द्वारा इस वर्ष 8, 9 एवं 10 नवम्बर को एमबी कालेज मैदान में होने वाले जोहार महोत्सव की तैयारियां अन्तिम चरण में हैं। अपनी संस्कृति, बोली भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक परम्पराओं संजोने के क्रम में पिछले 15 वर्षों से यह आयोजन हो रहा है। समिति के अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह पांगती व सचिव धीरेन्द्र सिंह पांगती ने सभी से सहयोग की अपील की है।

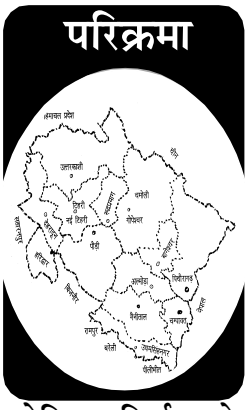

स्टेडियम निर्माण के लिये सेना की भूमि

चम्पावत। गोरलचौड़ मैदान के पास की सेना की भूमि उत्तराखण्ड सरकार को दिये जाने के लिये रक्षा सम्पदा भवन ने पत्र जारी किया है। इससे गोरलचौड़ मैदान को विस्तार देते हुए स्टेडियम बनने का रास्ता साफ हो चुका है। सेना की 77 नाली 2 मुट्ठी जमीन प्रदेश सरकार को मिलेगी इसके बदले सेना को निष्प्रयोज्य रोजिन फैक्ट्री परिसर में जमीन दी जानी है।

15 नवम्बर से शुरू होगी जंगल सफारी

नैनीताल। राजाजी टाइगर रिजर्व पार्क में पर्यटक 15 नवम्बर से जंगल सफारी का आनन्द ले सकेंगे। पर्यट व्यवसायी पंजीकरण के लिये पहले ही सम्पर्क कर चुके हैं। पार्क के अन्दर अलग-अलग रेंजों में सफारी ट्रैक तैयार हो चुके हैं।

बताते चलें कि जंगल सफारी के लिए पार्क हर वर्ष 15 नवम्बर को खोला जाता है जिसका समय 15 जून तक है। इस दौरान यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक पहुँचते हैं। पार्क प्रशासन की आय का यह बड़ा उपक्रम है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास ने दुर्योधन...

प्रथम पृष्ठ का शेष

161) जहाँ दुर्योधन के दूत (और शकुनि के पुत्र) उलूक ने पाण्डवों को सन्देश दिया।

दुर्योधन अपने समय के महानतम योद्धाओं में एक थे और अत्यन्त कुशल सारथी भी थे, जो सद्गुण उस काल में कृष्ण और शल्य जैसे विशिष्ट लोगों के पास ही था। यह उनके महान योद्धा होने का ही प्रमाण था कि जहाँ युधिष्ठिर को बार बार हारकर या परेशान होकर रणभूमि से भागना पड़ा था, वहाँ दुर्योधन अन्त तक अजेय रहे। युद्ध के अठारहों दिन वे अजेय रहे और अपनी एक खास तिरस्कारिणी विद्या के आधार पर पानी में जा छिपे। यकीन मानिए कि अगर भीम ने नियम तोड़कर दुर्योधन की जांघ पर गदा न मारी होती तो दुर्योधन को गदायुद्ध में हरा पाना भीम के बस में नहीं था। दुर्योधन ने अपने समय के श्रेष्ठतम गदायुद्ध विशेषज्ञ बलराम से गदायुद्ध सीखा था और वे अपनी पीढ़ी के सर्वश्रेष्ठ और अप्रतिम गदायोद्धा थे।

पर जैसे दुर्योधन का परम महत्वाकांक्षी होना, श्रेष्ठ शासक और सेनापति होना और अप्रतिम गदाधारी होना-अर्थात् उनके इतने महान गुणों को खलनायक के खाते में डाल दिया गया है, वैसे ही उनके एक अन्य विशिष्ट सद्गुण का भी इतिहास ने उचित मूल्यांकन नहीं किया-वह है दुर्योधन का सच्चा दोस्त होना। दुर्योधन मैत्री करना जानते थे और उनके चारित्रिक गुणों से अभिभूत उनके मित्र उनके लिए जान तक पर खेलने को तैयार रहते थे। कर्ण और अश्वत्थामा दुर्योधन के ऐसे मित्रों की श्रेणी में आते हैं, जो अन्त तक दुर्योधन के साथ रहे और जान और आन पर खेल गए। एक परम्परा यह भी कहती है कि पाण्डवों के एक मामा शल्य के साथ भी दुर्योधन की घनिष्ठ मैत्री थी, जिसकी वजह से ही शल्य ने दुर्योधन की ओर लड़ना ही नहीं बल्कि कर्ण का सारथी तक बनना स्वीकार किया, बेशक महाभारत ने शल्य के उस चरित्र को कथाओं के माध्यम से पाण्डवों के हक में मोड़ दिया है। हम नहीं जानते। पर दुर्योधन के चरित्र की उस विशेषता को कैसे भुलाया जा सकता है।

पर अपने समय के एक विशिष्ट नायक दुर्योधन के इन तमाम सद्गुणों पर क्यों खड़िया पोत दी गई? तीन कारण समझ में आते हैं। एक तो जाहिर है, दुर्योधन का युद्ध हार जाना। महाभारत के युद्ध में कौन जीता, कौन हारा, इस पर महाभारत काल से ही अखण्ड और अनिर्णीत बहस चल रही है, पर हस्तिनापुर के जिस सिंहासन पर दुर्योधन की महत्वाकांक्षा जुड़ी थी, वह अन्ततः युधिष्ठिर को मिला, इसलिए तकनीकी दृष्टि से युधिष्ठिर को विजेता और दुर्योधन को हारा हुआ मान लिया गया तो इसमें इतिहास का क्या दोष और इतिहास चूंकि स्वभाव से ही विजेता और सफल व्यक्तियों के साथ पक्षपात करता है, इसलिए उसने युधिष्ठिर से पक्षपात किया और दुर्योधन से अन्याय। परिणामस्वरूप नायक के श्रेष्ठ गुणों से विभूषित व्यक्ति के तमाम सद्गुणों पर खड़िया पोत दी गई और पाण्डवों के वे दुर्गुण भी भुला दिए गए, जो अन्यथा उन्हें दुर्योधन से कोई खास अलग साबित नहीं करते।

दूसरा बड़ा कारण पिता धृतराष्ट्र और मामा शकुनि के सन्दर्भ में ढूंढा जा सकता है। दुर्योधन अपनी महत्वाकांक्षा के इस कदर वशीभूत हो चुके थे कि उनकी राज्यप्राप्ति की इच्छा को भड़काने के बजाए उसे उदात्त करने की जरूरत थी। भीष्म और द्रोण जैसे वयोवृद्ध यह काम कर सकते थे। पर वे पाण्डवों की तरफ इतना ज्यादा झुके हुए थे कि दुर्योधन उन्हें अवगुणों की खान के अलावा कुछ नजर ही नहीं आते थे। फिर कैसे गुणों की ओर ध्यान जाता? उन गुणों को उदात्त करने की तो स्थिति ही बाद में आती है। इसके विपरीत पिता धृतराष्ट्र और मामा शकुनि ने दुर्योधन को बिगड़ा हुआ नवाब बनाने में मानो अपनी पूरी शक्ति लगा दी। जुआ खेला जाए या नहीं, इस पर क्या धृतराष्ट्र जुआ न खेलने का आदेश नहीं दे सकते थे? पर न केवल उन्होंने पहली बार, बल्कि दूसरी बार भी जुआ खेलने का आदेश दिया। शकुनि धूर्तता से जुआ जीत रहे थे, इस पर फिर किसका ध्यान जाता? इससे पहले वारणावत के लाक्षागृह में पाण्डवों को जलाकर मार देने का षड्यन्त्र रचने पर यदि पिता धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन को अचित दण्ड, मसलन निष्कासन जैसा दण्ड सुना देते तो क्या दुर्योधन में आगे जाकर संभलने की इच्छा पैदा न होती? पर न केवल दुर्योधन को संभाला गया, बल्कि मामा शकुनि द्वारा अपने भानजे को निरन्तर कुमार्ग की, षड्यन्त्र रचने की, दूसरों को अपमानित करने की प्रेरणा दी गई।

इन सारे प्रसंगों को दुर्योधन के नायकत्व को सामने लाने के लिए पेश किया गया है, पर दुर्योधन के अवगुणों के बारे में क्या कहा जाए, जिनके कारण एक अच्छे-भले सुयोधन (दुर्योधन का असली नाम) को दुर्योधन के रूप में मशहूर होने को बाध्य होना पड़ा? वे सभी दुर्गुण भी तो दुर्योधन के ही थे। मसलन प्रमाणकोटि में जलक्रीड़ा के दौरान भीमसेन को जरूरत से ज्यादा खिलाकर, जहर देकर, बेहोश करके पानी में बहा देने की क्या जरूरत थी? घोषयात्रा के द्वैतवन जाकर गन्धर्वराज चित्रसेन से उलझने और अपमानित होने की क्या जरूरत थी? विराट राजा की गउएं चुराकर वहाँ हमला करने की और अर्जुन से मुंह की खाने की क्या जरूरत थी? वारणावत में लाक्षागृह बनाकर वहाँ पाण्डवों को रहने के लिये भेजने और फिर उन्हें जलाकर मार देने का कुटिल षड्यन्त्र करने की क्या जरूरत थी? जुआ खेल कर पाण्डवों को अपमानित करने की क्या जरूरत थी?

इनमें से किसी भी चीज की जरूरत नहीं थी और घटना को टालना मुमकिन था, फिर भी दुर्योधन ने यह सब किया तो जाहिर है कि दुर्योधन अपने कुटिल और एक हद तक मूर्खतापूर्ण स्वभाव से लाचार थे। उस हद तक लाचार थे कि दुर्योधन ने सोचा ही नहीं कि इसके परिणाम क्या हो सकते हैं। और परिणाम यह हुआ कि युद्ध में हार जाने के बाद इतिहास ने उनके तमाम गुणों की चिनगारियों पर इन कुटिलताओं और मूर्खताओं की राख बिखेर दी। वे जीत जाते तो शायद पांसा पलट जाता, पर वे हार गए और उनकी कुटिलता एवं मूर्खताएं ही उनके चरित्र की मुख्य धारा मान ली गईं। वे सुबोध न से दुर्योधन बना दिए गए, यानी इतिहास ने बेशक दुर्योधन से अन्याय न किया हो, पर पूरा न्याय भी कहाँ किया है? यहाँ तक कह दिया कि जब दुर्योधन का जन्म हुआ तो चारों ओर गीदड़ रोने लगे और गधे रेंकने लगे, मानो देश की परमशक्तिशाली राजसत्ता हस्तिनापुर के राजप्रासाद के चारों ओर हर वक्त गीदड़ और गधे घूमते रहते हों।

(साभार नवभारत टाइम्स)

हरि प्रदर्शनी पर इस बार

कृषि में उत्कृष्ट कार्य के लिये सम्मानित होंगे

हल्द्वानी। श्री हरि प्रदर्शनी की भव्यता के लिये हरि स्मारक समिति की बैठक में आपसी सहयोग के अलावा तमाम निर्णय लिये गये। समिति के प्रेम सिंह जंगपांगी ने बताया कि सदस्यों के आर्थिक सहयोग के आधार पर आयोजन को बढ़ाया जाएगा। मुनस्यारी क्षेत्र में किसी किसान/काश्तकार द्वारा कृषि क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने एवं किसी एनजीओ या उद्यमी जिसने क्षेत्र के लिये रोजगार सृजित किये हों को भी सम्मानित किया जाएगा।

बैठक में तय किया गया कि गत वर्ष दिए गए पारितोषकों में इस बार भी कोई परिवर्तन न करने का निर्णय लिया गया है। इस बार मोमेंटों के स्थान पर प्रतिभागियों को शील्ड एवं प्रमाण पत्र देने का निर्णय लिया गया है। हरि स्मारक समिति का प्रयास है कि विधायक और जिलाधिकारी आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग करें। इसके अलावा आने वाले मेहमानों का स्वागत किया जायेगा। प्रदर्शनी के दौरान होने वाली अन्य प्रतियोगिता जैसे बॉलीबाल, रस्साकस्सी, ढुस्का-चांचरी, क्विज, सांस्कृतिक आयोजन में यदि कोई सदस्य अपनों के याद में किसी भी प्रतियोगिता को प्रायोजित कर सकता है, इसके लिये समिति ने अनुरोध भी किया है।

किताब कौतिक रद्द, राजनीति हवा की चर्चा

चम्पावत। इस बार दीपोत्सव आयोजन के दौरान किताब कौतिक का तीन दिनी कार्यक्रम प्रस्तावित था, इसके रद्द होते ही चर्चा छिड़ चुकी है कि राजनीति हवा के कारण ऐसा हो रहा है।

प्रस्तावित आयोजन के स्थगित होने के पीछे ट्रस्ट से अनुमति नहीं मिलने की बात कही गई है परन्तु इस आयोजन को लेकर व्हट्एप पर लगातार चर्चाएं तेज हैं। कहा जा रहा है कि पूरी तैयारी के बाद भी किताब कौतिक स्थगित होना दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे पढ़ने-पढ़ाने की संस्कृति को प्रोत्साहित करने की पहल को आघात लगेगा। इससे जुड़े कुछ लोग नया स्थान तलाश कर आयोजन का सुझाव दे रहे हैं। बताते चलें कि किताब कौतिक के आयोजनों में पहले भी अवरोध हुए हैं।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हरि प्रदर्शनी एवं जोहार महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं-

पर्वतीय एजेन्सीज

कालाढूंगी रोड

(मुखानी चौराहे के निकट)

हल्द्वानी

प्रो. संजय पन्त

मुनस्यारी : पर्यटकों को लुभाने के लिये स्टेशन भी स्वच्छ रखना होगा

नगरपालिका को ठोस कदम उठाने होंगे : करणसिंह जंगपांगी

मुनस्यारी। हिमनगरी के नाम से विख्यात मुनस्यारी देश-दुनिया में चर्चित है और आने वाले समय में पर्यटन की अपार सम्भावनाएं यहाँ हैं। इन्हीं कारणों को देख जोहार घाटी तक संवारने की योजना क्षेत्रवासियों के मन में है और वह चाहते हैं कि आने वाले मेहमानों के जरिए भला सन्देश भी दूर तक जाए लेकिन नगर में प्रवेश करते ही मुख्य स्टेशन के हालात देख सोच पड़ जाते हैं कि सुरम्य स्थल में साफ-सफाई का ध्यान नहीं है। मल्ला दुम्मर निवासी समाजसेवी करण सिंह जंगपांगी ने सभी से स्वच्छता अभियान से जुड़ने की अपील के साथ ही नगर पालिका ने निवेदन किया है कि वह मुख्य स्टेशन में सफाई की विशेष व्यवस्था करवा दे। पंचाचूली का विहंगम दृश्य जिस जगह से दिखाई देता है वहाँ शानदार व्यू प्वांइट होना जरूरी है जो सबको सन्देश देगा।

हरि प्रदर्शनी एवं जोहार महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं-

नरेन्द्र सिंह जंगपांगी

लक्ष्मी विहार, मल्ली बमौरी

दोनहरिया, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

हरि प्रदर्शनी एवं जोहार महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं-

खड़क सिंह जंगपांगी

बलवन्त कालौनी

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

हरि प्रदर्शनी एवं जोहार महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं-

गंगा सिंह मर्तोलिया

जीवनपुर, विठौरिया नं. 1,

हल्द्वानी

Hayat Paradise

Bus Station

Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)